VIBRANT PUSHTI

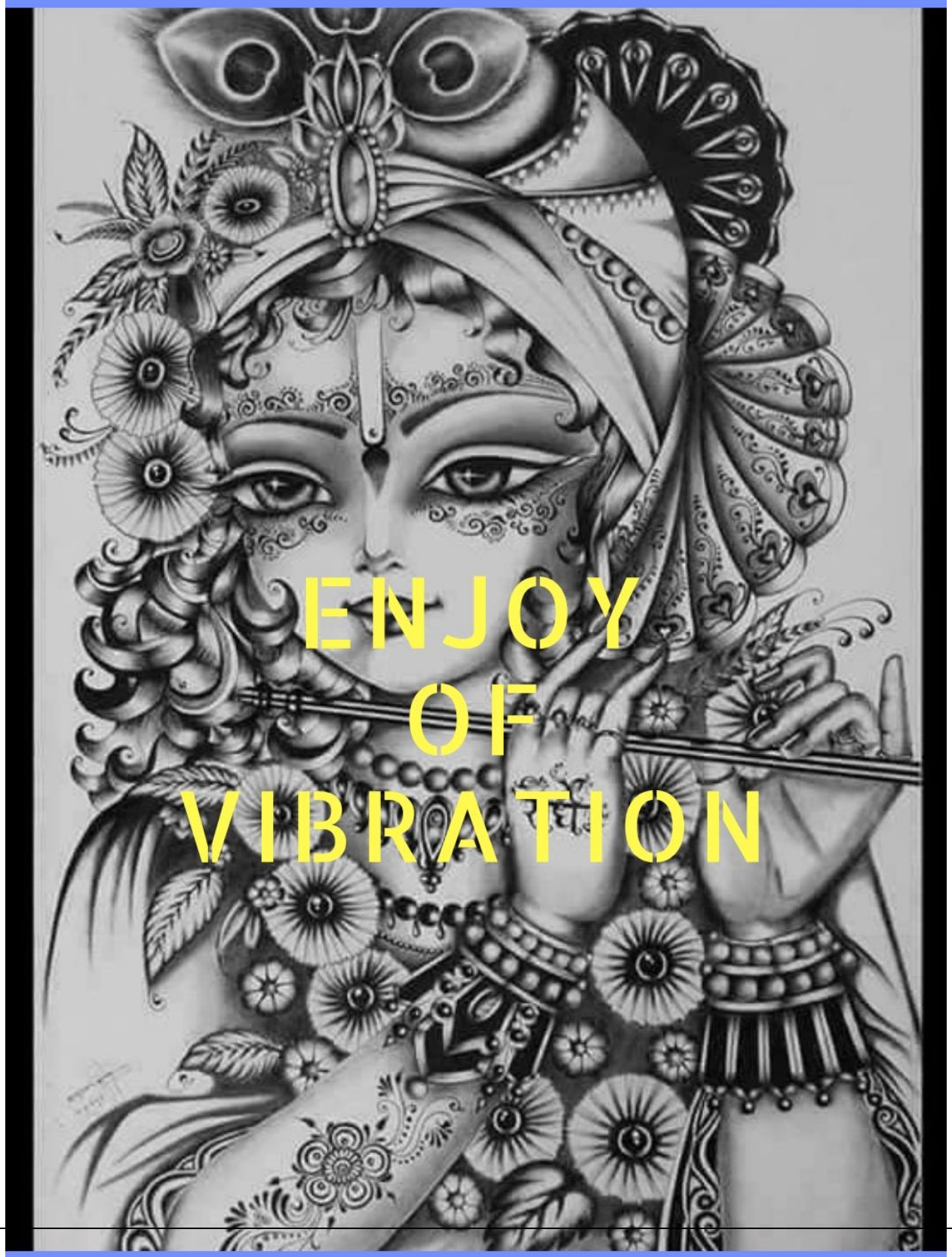

ENJOY OF VIBRATION

शिस्त और निखालसता को हम सिद्धांत बना दे तो न कभी हमें तकलीफे आयेगी, न दुख झेलेंगे।

सच कहे तो अगर जो आये तो सिर्फ एक को ही आना होगा और वह है भगवान।

सूक्ष्मता से ही कहना यह सत्य है?

क्या हमें यह अपनाना होगा?

"Vibrant Pushti"

श्री यमुनाजी का रंग श्याम क्यु?

श्री यमुनाजी को श्याम सुंदर श्रीयमुना महारानी क्यु कहते है?

श्रीकृष्ण का रंग श्याम - श्रीराधा का रंग गौर।

प्रीत तो केवल श्रीराधा और श्रीकृष्ण में ही भनी है।

श्री यमुनाजी के साथ श्रीकृष्ण को नही जोडो।

जहां सर्वत्र रंग गुल के एक रंग हो वह रंग श्याम है। यही रंग सदा निखरता है।

हर रंग से श्याम रंग जूडा है। ऐसा ओर कोई रंग नही है जो सब से जूडा हो।

श्रीयमुनाजी जगत के कोई पुन्य या कोई पाप को नही जानते और समझते है।

श्याम रंग सलामत का रंग है, संरक्षण का रंग है। एक बार नयन में बस जाये तो.....

श्याम रंग खुद को पहचान का रंग है। विश्वास है, शक्ति है।

"Vibrant Pushti"

हर सतसंग में कुछ तो जानते है।

हर दर्शन में कुछ तो भाता है।

हर यात्रा में कुछ तो चरण रज स्पर्श करते है।

हर सेवा में कुछ तो भाव जगाते है।

हर प्रसाद में कुछ तो रस पीते है।

हर आरती में कुछ तो समर्पित करने का संकल्प करते है।

हर नदी स्नान में कुछ तो शुद्ध करते है।

हर श्रीगुरु शरण से कुछ तो विश्वास धरते है।

बस अब हमें यही करना है कि हमें कुछ जगाना है।

"Vibrant Pushti"

राम है तो कृष्ण है।

राम पधारे तो कृष्ण प्रकटे।

राम चले तो कृष्ण नाचे।

राम खिलाये तो कृष्ण पिलायें।

राम कहे तो कृष्ण पुकारे।

राम त्यागे तो कृष्ण निभाये।

राम संभाले तो कृष्ण लूटाये।

राम एक तो कृष्ण अनेक।

राम मलके तो कृष्ण तिरछे।

राम ढूंढे तो कृष्ण भागे।

राम सरल तो कृष्ण नटखट।

राम पैदल तो कृष्ण दौडे।

राम होले तो कृष्ण डोले।

राम बैठे तो कृष्ण खेले।

राम स्वरुप तो कृष्ण बहुरुप।

राम जीते तो कृष्ण हारे।

राम भटके तो कृष्ण चीटके।

राम मरमीत तो कृष्ण कर्मीत।

राम मधुर तो कृष्ण सुमधुर।

राम सेवक तो कृष्ण प्रेरक।

राम तीर चलाये तो कृष्ण बंसी बजाये।

राम सगुण तो कृष्ण निर्गुण।

राम पुरुषोत्तम तो कृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम।

राम योद्धा तो कृष्ण सारथी।

राम केवट तो कृष्ण सुदामा।

राम शबरी तो कृष्ण विदुर।

राम रावण तो कृष्ण कंस।

राम मारे तो कृष्ण तारे।

राम जागे तो कृष्ण जगाये।

राम संग तो कृष्ण रंग।

राम के पीछे सीता तो राधा के पीछे कृष्ण।

राम हसाये तो कृष्ण रुलाये।

राम सीधे तो कृष्ण बांके।

राम रीति तो कृष्ण प्रीति।

राम स्तुती तो कृष्ण विश्रुती।

राम शिखाये तो कृष्ण भजाये।

राम सूर्य तो कृष्ण चंद्र।

सीताराम तो राधेश्याम।

"Vibrant Pushti"

जगत में कितने प्रकार के मनुष्य है, हर मनुष्य के अंदर कोई एक रीति है जो उन्हें जीवन जीने की प्रेरणा करता रहता है। यही प्रेरणा में उत्कृष्ट विचार धारा से जोडता जाय तो उनका जीवन त्रिवेणी संगम से खुद को क्षीरसागर में समर्पित करेगा।

"Vibrant Pushti"

सेवा - साधना - चिंतन ऐसे साधन है जिससे आंतरिक शक्ति जाननी और जागृत करनी होती है।

मनुष्य जीवन की ये अमूल्यता है। यही समझना भी एक खुद की जागृतता है।

"Vibrant Pushti"

हमारे विचार, हमारा कर्तव्य, हमारा विश्वास से ही हम श्री प्रभु को मानते है पहचानते है।

हां! हम यही विचार, यही कर्तव्य बार बार बदले तो हम योग्य विचारशील, योग्य कर्तव्यनिष्ठ, योग्य विश्वसनीय नही है।

इससे हमारी योग्यता नही संस्कृत होती है और हम भटकते रहते है। न हम किसीके न कोई हमारा।

न कोई राह है न कोई ठिकाना, बस केवल भटकना।

सच कहे तो हम पूरा जीवन भटकते है।न तो शुद्धता पाते है और अस्थिर रहते है।

"Vibrant Pushti"

एक सोच से भी हम खुदाई समझ सकते है।

एक कर्म से भी हम खुदा कि राह देख सकते है।

एक प्रार्थना से भी हम खुदा को पैगाम दे सकते है।

एक सेवा से भी हम खुदा को स्पर्श कर सकते है।

"Vibrant Pushti"

आज एक ऐसा एहसास हुआ, पुरुष अपनी माँ, पत्नी, बेटी और प्रियतमा को सत्य, पवित्र, शुद्ध, सरल और योग्य व्यवहार या योग्य संस्कृत साथ नहीं दे तो खुद बरबाद ही होता है। सच कहे तो श्रीप्रभु ने यही रचना और जीवन शैली भी केवल एकात्म होकर ही परमात्मा पा सकते है।

"Vibrant Pushti"

जहां भक्ति और ज्ञानी आत्मीय तत्वों प्रकटते है वहां श्री गुरु, श्री संत, श्री भक्त श्रीप्रभु को अपनी पास खींच कर सर्वत्र आनंद और सत्य का प्रकाश फैलाते है।

"Vibrant Pushti"

मनुष्य की शक्ति

श्रद्धा - ज्ञान - भक्ति - विश्वास - संकल्प - विचार - कर्म - गति - तेज - धैर्य - दान - सामर्थ्य - साक्षर - संस्कृति - शिक्षा मौन - निडर - अखंड - स्थिर - सत्य - दया - करुणा - बलिदान - कीर्ति - एकाग्रता - शांत - सरल - विनम्र - विनय - विवेक - प्रीत - संरक्षण - जागृत - युद्ध - यौवन - समांतर - शिस्त - निर्माण - निर्णय - निर्मोही - शुद्ध - दीर्घ - आयुस्मरण - चेतन - न्याय - निखालस - निर्गुण - स्वस्थ - आत्म - सम्मान - संयोग - विरह - सकारात्मक - ऊर्जा - विच्छेदन - विकास - नमन - निरंतर - निश्चय - निर्भय - वीर्य - विजय - आनंद - परिवर्तन, आदि इतनी शक्ति है - जो हमें पहचान कर योग्य उपयोग करना है।

सच ही समझना हम शक्ति का प्रयोग कैसे करते है?

"Vibrant Pushti"

अतूटता में बिखरता न थी।

दृडता में साधारणता न थी ।

निश्चितता में अनिश्चितता न थी।

विचारों में सामान्यता न थी।

संस्कार में अशुद्धता न थी।

निडरता में अकृत्यता न थी।

फिर भी हम न कर पाये। क्या है ये जगत की रीत की हम खुद को संभल न पाये।

कैसे है ये रिश्ते, कैसी है ये रीत साथ मिलकर रहने की?

बिखर जाये।

अनिश्चित हो जाये।

सामान्य हो जाये।

अशुद्ध हो जाये।

अकृत्य हो जाये।

"Vibrant Pushti"

श्रीप्रभु को जगाये.....

रात का विरह.....

श्रीठाकोरजी के दर्शन की तीव्रता, आतुरता, अभिलाषा.....

नयन खुलते ही श्रीकंठी के दर्शन और स्पर्श।

श्री ब्रह्मसंबध करने की सलामती।

श्रीयमुनाजी निकट की कक्षा।

कुटुंब के हर सदस्य में गोप गोपी भाव।

तन, मन और धन शुद्धि स्नान।

स्व धारण - स्व साक्षर तिलक।

आंतर - बाह्य शुद्धि चरणामृत पान।

निकुंज में मातृ, पितृ, सखा सखी, अष्ट सखा, गाय, भकत, पशु - पंखी संग सुमधुर जगाने का पद।

श्रीप्रभु का विनंती स्वीकार हास्य।

श्रीप्रभु का अंगडाई सभर जागने का संकेत।

सर्वे स्पर्शीय परम आत्मजनो का अति उत्साह - उमंग के साथ नाच।

श्रीप्रभु के विरह मुक्त पलके खुलना।

"श्री वलल्लभाधिश की जय"

"श्री श्याम सुंदर श्री यमुना महाराणी की जय"

"श्री गिरिराज धरण की जय"

"श्री निकुंज नायक गौ प्रतिपाल श्री श्रीनाथजी की जय"

"जय श्री कृष्ण"

"Vibrant Pushti"

सत्य तो यह है कि

नहीं कहीं छल कपट है

नहीं कहीं बेइमानी है

नहीं कहीं जूठ है

नहीं कहीं अन्याय है

नहीं कहीं विश्वासघात है

नहीं कहीं दुराचार है

नहीं कहीं असमंजस है

नहीं कहीं असत्य है

नहीं कहीं दुख है

नहीं कहीं नफरत है

नहीं कहीं असलामती है

जो कुछ भी है वह हमने ही बनाया है, हमने ही रचा है।

खुद को शैतान घडते है और दूसरे को इनसान बनाने फिरते हो।

कैसी है ये रीत मनुष्य की?

"Vibrant Pushti"

पुष्टिमार्ग के पंच मूल रुप तत्वों

अग्नि - श्री वल्लभाधीशजी

जल - श्री यमुनाजी

वायु - श्री अष्टसखा

पृथ्वी - श्री गिरिराजजी

आकाश - श्री सुबोधिनीजी

हर जीव तत्वकी उत्पत्ति पंच महाभूत तत्वों से हुई है। हम हमारा जीवन यही पुष्टिमार्ग के यही पंच मूल रुप तत्वों से सिंचन करे तो पुर्ण पुरुषोत्तम से ब्रह्मसंबंध पाये।

"Vibrant Pushti"

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં

શ્રીનાથજીનાં રંગમાં, શ્રી વલ્લભનાં પુષ્ટિ પથમાં

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં.....

અષ્ટસખાનાં પદ સ્મરિને ભાવ જગાડું જીવનમાં

ભાવ જગાડું જીવનમાં

આઠે પ્રહરનાં દર્શન કરીને

શ્રીકૃષ્ણ નિહાળુ જગતમાં

શ્રીકૃષ્ણ નિહાળુ જગતમાં

તન મન ધનથી હું રંગાવું

તન મન ધનથી હું રંગાવું

રંગાવું પુષ્ટિ રંગમાં

હું રંગાઇ જાવું રંગમાં....

સેવા પધરાવી શ્રીનાથજી સ્પર્શ પામી

ચિત્તડું ચોળુ પુષ્ટિમાં

ચિત્તડું ચોળુ પુષ્ટિમાં

શ્રીગિરિરાજની પરિક્રમા કરી

પ્રીત પાન શ્રીયમુનાજી

પ્રીત પાન શ્રીયમુનાજી

ષોડશ ગાઇને વિનવું વલ્લભને

ષોડશ ગાઇને વિનવું વલ્લભને

સદા રહે તું સંગમા

હું રંગાઈ જાવું રંગમાં

શ્રીનાથજીના રંગમાં

શ્રી વલ્લભનાં પુષ્ટિ પથમાં

"Vibrant Pushti"

नटखट खटखट करे कनैयो ।

प्रीत रंग रंगे घनश्याम ।।

छेडे बंसी तान यमुना तीर ।

बावरी हुई मैं घनश्याम ।।

पैजनीया बाजे छननन छननन ।

पूकारे विरह घनश्याम ।।

नैन मीले पर चैन न पावें ।

तन मन है घनश्याम ।।

कब होंगे एक दिल साँवरिया ।

थाम ले अब घनश्याम ।।

"Vibrant Pushti"

हम बार बार अपने धर्म के सिद्धांतों का सत्संग करते है, और हमारे जीवन में अपनाने का प्रयत्न करते है।

यही सिद्धांतों हम हमारे कुटुंबमें कहीं परिवर्तनता से अपनाते है जिससे द्रडता नहीं जागती है और हम हमारे कुटुंब के साथ भटक जाते है। न रहता है धर्म, सिद्धांत और संस्कृति केवल रहता है एक दिखावा।

क्या यही है हम और हमारा कर्तव्य?

यह कोई कलयुग का प्रभाव नहीं है, यह तो हमारा कर्म का परिणाम है।

सिद्धांत और संस्कृति द्रडता से अपनाना ही हमारी योग्यता है।

"Vibrant Pushti"

परम सत्य

क्या किसीका मन चोरी हुआ है?

क्या किसीका तन चोरी हुआ है?

क्या किसीका दिल चोरी हुआ है?

सच कहूँ नहीं हुआ है।

चोक्कस नहीं हुआ है।

"Vibrant Pushti"

"चल सखी! सौतन के घर जाये।

मान घटे तो क्या घट जाये?

पिया के दर्शन तो पाये"

प्रीत की रीति निराली, ऐसी रीति कैसे पाये?

जो रीति में जगत छूटे पर भव सागर पार कर जाये।

कृष्ण ही हमरे प्रियतम हो तो ऐसी रीति हम पाये।

कृष्ण ही हमें प्रीत जताये, कृष्ण ही हमें जगाये।

कृष्ण ही हमें संवारे, कृष्ण ही हमारे साँवरे।

"Vibrant Pushti"

घूमते घूमते ही जानते है कि यह सृष्टि की महत्वता और हमारी महत्वता क्या है?

हम मनुष्य ही सृष्टि को सुंदर करते है और खुद को समझते है। समझ समझ के ही संस्कृति घडनी है और सृष्टि को साक्षर करनी है।

यही हमारा अमूल्य कर्तव्य है।

"Vibrant Pushti"

खुद ने बनायी दुनिया में बहुत कुछ होता है।

इसलिये तो हम बिकते है और खरीदाते है बाजार में।

पर खुदा ने रचाई दुनिया में केवल प्यार होता है।

जहां सोदा नहीं पर लूटाते है

हर पल विश्वास, हर पल ईमान,

हर पल साथ, हर पल खुद भगवान।

"Vibrant Pushti"

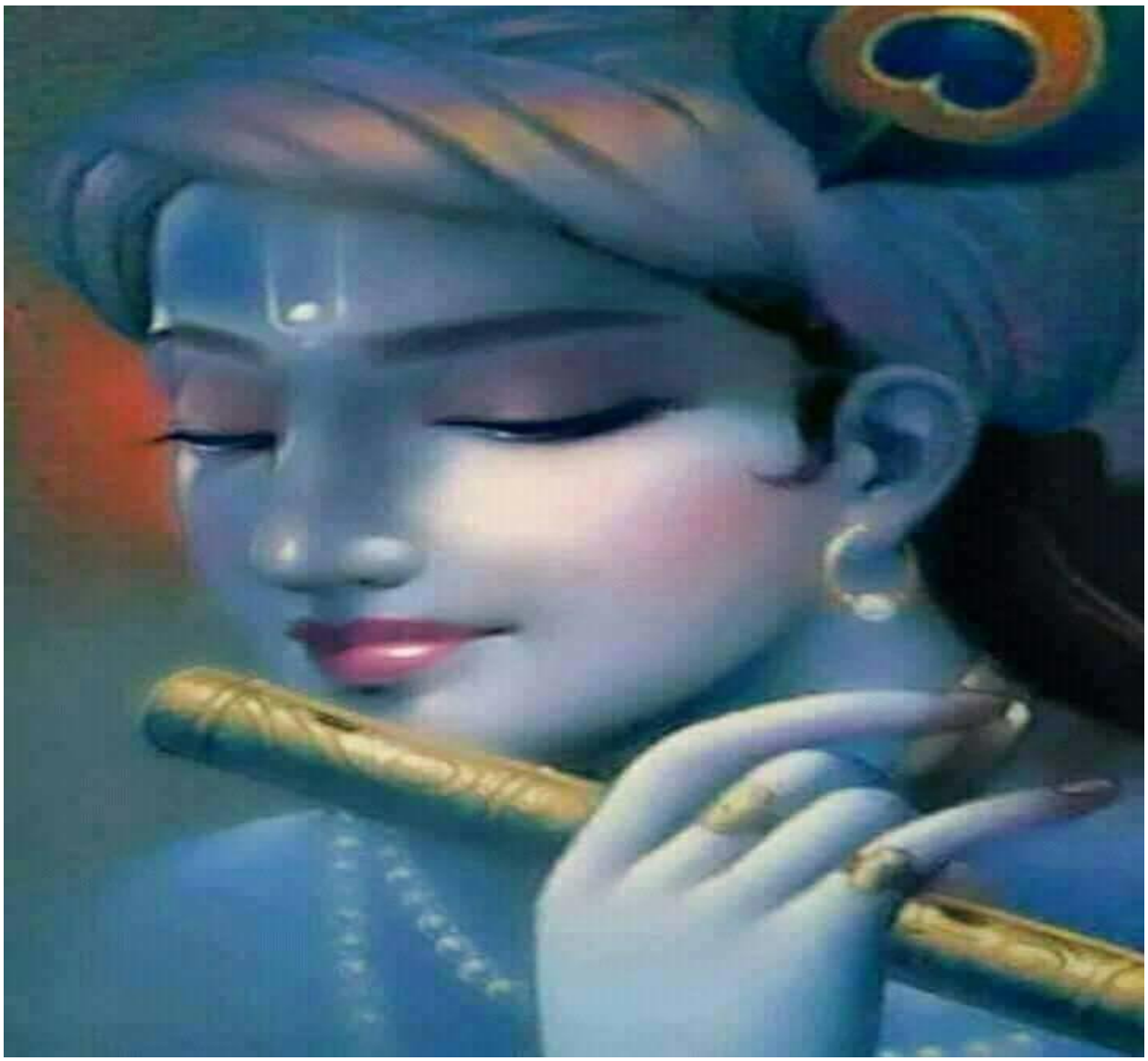

एक ही सूर्य है

एक ही पृथ्वी है

एक ही चंद्र है

एक ही शरीर है

तो भी कितनी परिवर्तनता!

भिन्न भिन्न जीवन

भिन्न भिन्न विचार

भिन्न भिन्न कार्य

भिन्न भिन्न धर्म

भिन्न भिन्न रिवाज

शायद यही ही समझ है

जिससे हम सर्वे है बेकरार!

जिससे सदा है सर्वे को कोई इंतजार!

जिससे जीते है मारामार!

क्या यही है जीवन का सार?

"Vibrant Pushti"

प्राकट्य "श्री वल्लभ"

श्री कृष्ण में समाये.

श्री यमुनाजी स्पर्श पमाये.

श्री गिरिराजजी गती कराये.

श्री ब्रह्मसंबंध से जुडाये.

श्री अष्टाक्षर मंत्र माधुर्य रस पीलाये.

श्री पुष्टि प्रीत सेवा रीत से खुद की पहचान कराये.

पल पल दर्शन, मनोरथ, उत्सव से तन मन धन सिद्ध कराये.

दंडवत प्रणाम!

"जय श्री वल्लभ"

"Vibrant Pushti"

यमुना के तट पर

गिरिराज के शिखर पर

वृंदावन के वट वृक्ष पर

पायल की झंकार पर

बंसी की धून पर

प्रीत के रंग पर

रास रचाये कान्हा

हमें पुकार कर

जीवन का संगीत यही है।

जीवन की रीत यही है।

जीवन की मधुरता यही है।

खेले पल पल हम तुमसे ऐसे

जीवन गाये, जीवन नाचे

बस! यही है जीवन जीत।

"Vibrant Pushti"

जीवन जीने का है या बिताने का है?

जीवन में रहना है या छोडना है?

जीवन रंगना है या रंगाना है?

जीवन जगाना है या देखना है?

जीवन तैराना है या तैरवाना है?

"Vibrant Pushti"

हिंदुस्तान में श्री प्रभु के 24 अवतार हुये। क्यु?

हिंदुस्तान में अनेक ऋषि हुये। और कहीं यज्ञ किये। क्यु?

हिंदुस्तान में अनेक धर्म प्रकट हुये। क्यु?

हर हिंदुस्तानी को धर्म धारणा के लिये क्यु असमंजस में रहना होता है?

कुछ समझना है। कुछ करना है। कुछ करेंगे ही।

अनेकता में एकता की एकता में अनेकता रखते है?

"Vibrant Pushti"

"प्रार्थना"

प्रार्थना हमारी सत्यता है, संस्कृति है, पहचान है।

प्रार्थना केवल योग्यता से ही होती है।

प्रार्थना केवल जोडती है। प्रार्थना में कोई भी कैसे भी जुड सकते है।

प्रार्थना मन और आत्मा को ही जोडती है।

प्रार्थना भौतिक सुख के लिए नहीं है।

प्रार्थना वरदान है, बलिदान है, संरक्षक है।

प्रार्थना का फल नहीं होता, प्रार्थना शक्ति है।

प्रार्थना निष्फल और निरर्थक नहीं है।

प्रार्थना तत्व है, निर्मल है, निर्माण है, निर्गुण है।

प्रार्थना तपश्चर्या है, तटस्थ है, स्थिर है।

"Vibrant Pushti"

बार बार सत्संग करते है, श्री प्रभु ने

मयूर पंख को अपनाया,

वेणु याने बंसरी अपनायी,

तुलसी माला अपनायी,

अति उत्तम है।

कभी हमने मयूर पंख का स्पर्श किया है? स्पर्श से कोई अनुभूति पायी है? और इनमें कुछ देखा है?

कभी हमने वेणु का स्पर्श किया है? और इनके स्पर्श से कोई अनुभूति पायी है?

तुलसीजी को बार बार चूटते है, हर चूटन पर कुछ हुआ? हर प्रसाद मे तुलसीजी को मुख में आरोगते हुए कुछ संकेत पाया?

नहीं नहीं। कयुं?

"Vibrant Pushti"

नयन की पलकें के कोने में एक भीगी भीगी सी धारा बह रही थी।

धारा मुखडे को स्पर्श करके कह रहा था।

आज दर्शन में अपने नयन से कहना - स्थिर रह कर उन्हें बसाना है जो यह धारा को श्री प्रभु चरण स्पर्श पाना है।

बहती धारा की यह तरस ही मेरी परम प्रार्थना है।

"Vibrant Pushti"

"मयूर पंख"

जैसे देखा तो मन में इतने रंग उभर आये की हर रंग रोम रोम में गुल ने लगा। हमारी धडकन के साथ हमारा लहु भी मिश्रित होने लगा। धीरे धीरे मेरा ये तन का रंग परिवर्तित हो गया। हम सोच में पड गये .....यह क्या हो रहा है?

धीरे धीरे पूरा शरीर सांवला हो गया।

ओहहह! वो साँवरिया और मैं भी भयी साँवरि!

उतने में ही एक मयूर पंख उडता हुआ मेरे अंग लग गया.....

"Vibrant Pushti"

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

Pankaj Shah

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "